ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दोहा एकादश

दिनांक—15/11/2020

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

(विशेष बात -:पिछली कक्षा में हमने पीडीएफ फाइल का नाम गलती से हिंदी व्याकरण दे दिया था उसे आप लोग हिंदी पाठ्यपुस्तक ही समझेंगे। दोहा एकादश आपके पाठ्य पुस्तक से है।)

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

<u>दोहा एकादश</u>

कबीरदास

साँईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय।।५।।

प्रस्तुत दोहा में कबीर दास अपने प्रभु से विनती करते हुए यह कह रहे हैं कि
~~~~~~~~~~

प्रभु मुझे इतनी संपदा दें जिससे मेरा परिवार समाहित हो सके
मेरा भी पालन हो जाये और कोई संत-अतिथि भी भूखा न जा सके।

कबीरदास कह रहे हैं कि उनको इतनी संपत्ति मिले इतना धन मिले जिसमें उनके परिवार का पालन-पोषण हो जाए और यदि उनके दरवाजे पर कोई अतिथि आ जाएं तो वह भूखा ना जा सके। अतः इस दोहा के माध्यम से कबीर दास अपने मालिक (ईश्वर)से बस इ तना ही धन- संपदा चाह रहे हैं जितने में उनके परिवार का पालन -पोषण हो सके और उनके दरवाजे से कोई व्यक्ति भूखा ना जा सके।

निंदक नियरे राखिए, ऑंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।६।।

कबीर दास दोहा के माध्यम से कह रहे हैं कि जो हमारी निंदा करता है, उसे अपने अधिकाधिक पास ही रखना चाहिए। वह तो बिना साबुन और पानी के हमारी कमियाँ बता कर हमारे स्वभाव को साफ़ करता ।

दोस पराया देखकर , चले हसंत हसंत ।
अपनो याद न आवई, जाको आदि न अंत।।७।।

इस दोहे के माध्यम से कबीरदास हम सबों को बता रहे हैं ; यह मनुष्य का स्वभाव है कि जब वह दूसरों के दोष देख कर हंसता है, तब उसे अपने दोष याद नहीं आते जिनका न शुरु का पता है और न ही अंत का ।

छात्र कार्य- दी गई पाठ्य सामग्री को लिखे एवं याद करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”